दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्रथम प्रश्न-पत्र

(संपूर्ण पाठ्यक्रम)

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

DTVF/19 (N-M)-M-H13/5

Name: Raul Gangwar   Mobile Number: ____________

Medium (English/Hindi): Hindi   Reg. Number: AWAKE-19/G002

Center & Date: Mukherjee Nagar, 13/8/19   UPSC Roll No. (If allotted): 0801337

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS and printed both in HINDI & ENGLISH.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xix) एक संगमकालीन स्थल

A Sangam site

(xx) एक नवपाषाणिक अधिवास स्थल

A neolithic habitat site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) प्राचीन भारत के इतिहास निर्माण में अवशेषों के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

Highlight the importance of relics in the construction of history of ancient India. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतिहास लेखन के प्रमुख सहायक उपकरणों में अवशेष, साहित्य, अभिलेख, सिक्के आदि महत्वपूर्ण हैं। जिनके अध्ययन से उस समय की विभिन्न धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक जानकारी का पता चलता है।

विभिन्न अवशेषों के द्वारा इतिहास निर्माण की प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण है। जैसे कि अभिलेखों का अवशेष मिलने से वहाँ की राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था का पता चलता है। इसी प्रकार सिंधु सभ्यता का अधिकांश इतिहास अवशेष आधारित है। जैसे कि स्नानागार के अवशेष, नगरीकृत व्यवस्था के अवशेष, चावल के अवशेष, मृदभांड के अवशेष आदि।

इसी प्रकार विभिन्न प्रकार से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सावधान प्रक्रियाओं के अवशेष प्राप्त होने से प्रचलित धार्मिक मान्यताओं के बारे में पता चलता है। जबकि पत्रों, किलों के अवशेष से तत्कालीन स्थापत्य कला का पता चलता है। तो मुद्रा, मुद्रों आदि द्वारा व्यापार-वाणिज्य के विकास का भी पता चलता है। इसी प्रकार गोदीवड़ा के साक्ष्य मिलने से विदेश व्यापार तथा बाँध निर्माण का पता चलता है जो कि तकनीकी तथा वैज्ञानिक समझ का सूचक है।

अतः इतिहास निर्माण के प्रमुख स्रोतों में अवशेष आधारित इतिहास की विश्वसनीयता तथा प्रमाणिकता अन्य स्रोतों की अपेक्षा ज्यादा होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(b) "मथुरा कला केंद्र भारतीय तथा विदेशी मूल के विभिन्न सामाजिक समूहों की मांगों को पूरा करने के प्रति जागरूक था।" कथन की समीक्षा कीजिये। 20

"Mathura Kala Kendra was conscious of meeting the demands of various social groups of Indian and foreign origin." Overview the statement. 20

प्राचीन समय में कला की प्रचलित शैलियों में स्वदेशी के रूप में प्रसिद्ध मथुरा कला शैली का विकास मथुरा के आस-पास के क्षेत्रों से सम्बन्ध था। इस कला का संरक्षण शक तथा कुषाणों ने किया तथा इसमें बौद्ध, जैन दोनों प्रकार के विषयों को अपनाया गया है।

मथुरा कला शैली में निर्माण हेतु मुख्यतया: लाल बलुआ पत्थर का इस्तेमाल किया गया है तथा इसे आदर्शवादी कला भी कहा जाता है। इस काल में अन्य प्रचलित कला शैलियों में गांधार कला शैली जिसे हेलिनिस्टिक कला शैली के रूप में भी जाना जाता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है तथा दक्षिण भारतीय अमरावती कला शैली ~~से~~ प्रमुख थी जिसका मुख्य विषय बौद्ध धर्म था।

मथुरा कला की प्रमुख विशेषताओं में, इसमें प्रभामंडल चमकदार बनाया जाता था, वस्त्रों को सिलवटें के साथ दिखाया जाता था, बुद्ध के बाल नहीं दिखाये जाते थे तथा साथ-साथ मूर्तियों में उन्हें बैठे हुए दिखाया गया है जिसमें भूमिस्पर्श मुद्रा, अभय दान मुद्रा प्रमुख हैं।

वस्तुतः मथुरा कला शैली की विषयवस्तु पूर्णतया स्वदेशी थी। ~~के~~ जैसे कि बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म से सम्बन्धित विषयों का चुनाव करना। इसी प्रकार जब मथुरा कला के निर्माण के दौरान प्रभामंडल का चमकदार बनाया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गया, शारीरिक विशेषताओं पर ध्यान दिया गया तो इसमे विदेशी मूल की कला सम्बन्धी विशेषताओं से भी यह युक्त हो गयी। जिस पर ~~मुख्यतया~~ प्रमुखतया शक व कुषाणों के संरक्षण का प्रभाव पड़ा।

वहीं गांधार कला शैली में विषय स्वदेशी तथा विशेषतायें विदेशी मूल से सम्बन्धित थी जबकि अमरावती कला शैली में विषय तथा विशेषताएँ दोनो स्वदेशी थीं।

इस प्रकार मथुरा कला शैली निर्माण तथा विषय के स्तर पर प्राचीन भारत समाज के देशी तथा विदेशी दोनो ~~समुदायों~~ समुदाय के लोगों की भावों का सार्थक तरीके से चित्रण करने में सफल रही थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) गुप्त साम्राज्य की सार्वभौमिकता पुनः स्थापित करने के लिये चंद्रगुप्त-II द्वारा अपनाई गई नीतियों की उसके पूर्ववर्ती शासकों की नीतियों से भिन्नता को स्पष्ट कीजिये। 15

Explain the difference in the policies adopted by Chandragupta-II from the policies of its predecessor rulers to restore the universality of the Gupta Empire. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

गुप्त साम्राज्य की स्थापना तीसरी शताब्दी के आस पास हुयी थी। जिसकी स्थापना श्री गुप्त ने की थी तथा इसके प्रमुख शासकों में चन्द्रगुप्त -I , समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त -II शामिल है।

चन्द्रगुप्त -II द्वारा साम्राज्य निर्माण तथा प्रसार के क्रम में उसने विभिन्न तरीके की नीतियाँ अपनायी। इसमें उसने वैवाहिक सम्बन्धों की स्थापना पर बल दिया। स्वयं नागा राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया तथा पुत्री का विवाह वाकाटक राजवंश से तो पुत्र का विवाह अन्य राजवंश से किया। जिसके चलते उसे विभिन्न राजवंशों का सहयोग प्राप्त

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुआ और उसने शकों को युद्ध में पराजित भी किया (वाकाटकों का सहयोग लेकर)।

चन्द्रगुप्त के पूर्ववर्ती राजाओं में ज्यादातर ने युद्ध द्वारा विस्तार की रणनीति अपनायी थी। जैसे कि चन्द्रगुप्त -1 द्वारा या फिर समुद्रगुप्त द्वारा। समुद्रगुप्त ने हालांकि प्रत्यक्ष नियंत्रण पर बल न देकर विभिन्न क्षेत्रों के लिए विभिन्न प्रकार की रणनीति अपनायी। जिसमें करस्थ राज्यों द्वारा कर प्राप्त करना, विदेशी राज्यों से कन्या प्राप्त करना, आटविक जातियों को परिचारिकीकृत की नीति द्वारा नियंत्रित करना शामिल है।

इस प्रकार समुद्रगुप्त ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चन्द्रगुप्त-II की नीतियों में भिन्नता मुख्यतः प्रसार व स्थायित्व प्राप्त करने के मुद्दे पर है वस्तुतः चन्द्रगुप्त-II ने सहयोग व समन्वय के द्वारा साम्राज्य को स्थायित्व दिया तथा युद्ध के द्वारा प्रसार भी किया। जबकि पूर्ववर्ती शासक प्रसार तो कर पाये किन्तु साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान के क्रम में उनका विशेष योगदान नहीं देखा जा सकता है।

अतः स्पष्ट है कि चन्द्रगुप्त-II अपनी नीतियों के सन्दर्भ में ज्यादा सजग तथा कुशल था जिसके चलते इसके साम्राज्य को कला व साहित्य के सन्दर्भ में भारत का स्वर्णकाल कहा जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) "सल्तनत काल में विकसित भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत के भक्ति आंदोलन से प्रभावित न होकर तत्कालीन समय की उपज था।" स्पष्टीकरण कीजिये।

"The Bhakti movement developed in the Sultanate period was not a product of the Bhakti movement of South India but a product of the time." Explain.

भक्ति आंदोलन का प्रारम्भ मुख्यतः 6 वीं -7 वीं सदी के आस पास माना जाता है जब शंकराचार्य द्वारा द्वैतवाद का सिद्धान्त दिया गया तथा इसका प्रसार मुख्यतया दक्षिण भारत में ज्यादा था।

किन्तु, रामानन्द के चलते 12वीं शताब्दी के आस-पास इसका प्रसार उत्तर भारत में भी हुआ। और उत्तर भारत में इसे ज्यादा प्रसिद्धि मिली।

भक्ति आन्दोलन के उत्तर भारत में प्रसार को दक्षिण भारत के आन्दोलन का प्रभाव देखा जाता है किन्तु इसके पीछे तत्कालीन उत्तर भारत की परिस्थितियाँ भी जिम्मेदारी थी। जैसे कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सलतनत काल में व्यक्ति द्वारा मुस्लिम शासन की स्थापना को अपने धर्म की पराजय के रूप में देखा फलस्वरूप उसने भक्ति की ओर रुख किया। इसी प्रकार विभिन्न युद्धों के चलते सामाजिक व्यवस्था में अशान्ति उत्पन्न हुयी जिस कारण व्यक्ति का भगवान में विश्वास बढ़ा। इसी प्रकार सूफी आन्दोलन के चलते हिन्दू धर्म में भी विभिन्न लोगों द्वारा सुधार की बात शुरू किया तथा विभिन्न धर्म सुधारकों का उद्भव हुआ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन के आविर्भाव में दक्षिण भारत के भक्ति आन्दोलन के प्रभाव के साथ-साथ तत्कालीन परिस्थितियाँ भी समान रूप से जिम्मेदार थीं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) तराइन के युद्ध ने 'राजपूत शक्ति के अपरिवर्तनीय पतन के युग' का सूत्रपात कर दिया। टिप्पणी कीजिये।

The war of Tarain initiated the 'era of irreversible decline of Rajput power'. Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

तराइन का युद्ध 1191 व 1192 में मुहम्मद गौरी तथा पृथ्वीराज चौहान के मध्य हुआ। प्रथम युद्ध में गोरी की हार हुयी तो द्वितीय युद्ध में गोरी ने विजय प्राप्त की।

तराइन के युद्ध के पश्चात उत्तर भारत में राजपूतों के स्थान पर सल्तनत युग का प्रारम्भ होता है। जिसमें विभिन्न सुल्तानों द्वारा अनेक राजपूत राजाओं को अपने अधीन बनाकर सल्तनत का विस्तार किया गया।

राजपूतों के पतन के इस में सामंतवादी व्यवस्था का योगदान मुख्य था तो तुर्क उनसे ज्यादा गतिशील व युद्ध कुशल थे। जिसकारण राजपूतों को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

पुनः सत्ता में वापसी का अवसर नहीं मिला और सल्तनत काल के पश्चात स्थापित मुगलकाल में भी राजपूतों ने अपनी सत्ता प्राप्त नहीं कर पायी और तत्पश्चात औपनिवेशिक शासन शुरू हो जाता है।

हालांकि कुछ राजपूत राज्यों ने समय समय पर अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम किया। किन्तु वह ज्यादा दीर्घ कालीन न हो सका। इसी प्रकार राजपूतों द्वारा विभिन्न आपसी मतभेदों तथा संघर्ष के चलते कभी एक सुदृढ़ राजनीतिक मोर्चा न बना पाना भी इनकी विफलता का मुख्य कारण रहा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजपूत सत्ता का पूर्णतया पतन नहीं हुआ बल्कि वह कुछ परिवर्तन के साथ कायम रही।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) प्रारंभिक मध्यकाल में विकेंद्रीयकृत प्रशासनिक व्यवस्था के स्वरूप पर टीका कीजिये।

Comment on the nature of decentralized administrative system in the early medieval period.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक मध्यकाल में भारत राजनीतिक रूप से विकेंद्रीकरण तथा असंगठित स्थिति में था। वस्तुतः विभिन्न छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व तथा विदेशी हमले भारतीय राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक व्यवस्था को प्रभावित कर रहे थे।

गुप्तोत्तर काल के बाद उत्तर भारत में किसी सुदृढ़ राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण नहीं हो सका। इसी क्रम में पाल-प्रतिहार-राष्ट्रकूट संघर्ष के चलते भी प्रशासनिक एकीकरण की प्रक्रिया नहीं हो सकी।

इसी क्रम में मध्यकाल तक सामंतवाद का बोलबाला भी चरम पर था जिसके कारण छोटे-2 स्वायत्त 'क्षेत्र अस्तित्व में आये जिनकी अपनी राजनीति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्योंकि प्रशासनिक कार्य प्रणाली हुआ करती थी। जिस कारण बंद अर्थव्यवस्था तथा प्रशासनिक विकेंद्रीकरण की स्थिति का विकास हुआ। यह स्थिति मध्यकाल में सल्तनत युग के आने तक विद्यमान रही।

हालांकि दक्षिण भारत में इस समय चोल युग के दौरान प्रशासनिक एकीकरण भी देखने को मिलता है। जिसके तहत विदेशी व्यापार, राजनैतिक सुदृढ़ता के चलते, दक्षिण भारत की समृद्धता तथा विकास में वृद्धि होती है।

इस प्रकार यह कह सकते हैं कि प्रशासनिक विकेंद्रीकरण का यह परिदृश्य सम्पूर्ण भारत में विद्यमान न होकर केवल उत्तर भारत के सन्दर्भ में ज्यादा प्रासंगिक है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) जहाँगीर पर अकबर की धार्मिक नीति से पलायन का आक्षेप कितना तर्कसंगत है?

How rational is the attack on Jahangir for escaping from Akbar's religious policy?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुगलकालीन धार्मिक नीति का सूत्रपात अकबर द्वारा किया गया था। उसने तीर्थयात्रा, जजिया कर की समाप्ति के द्वारा तथा हिन्दु-मुस्लिम समन्वय पर आधारित उदारवादी धार्मिक नीति प्रतिपादित की थी।

अकबर के बाद जहाँगीर शासक बना। उसने मुख्यतया अपने पिता की ही धार्मिक नीति का अनुसरण किया जिसमें जजिया व तीर्थयात्रा कर की समाप्ति लागू रही किन्तु इसके कुछ कार्य जैसे- सिखों के गुरू अर्जुनदेव को प्राणदण्ड देना, मंदिरों को तोड़ने आदि से उस पर अकबरकालीन धार्मिक नीति से पलायन के आरोप लगाये जाते हैं।

किन्तु यह बात ध्यान रखने योग्य है कि ये आक्षेप तर्कसंगत नहीं है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

क्योंकि अर्जुनदेव को फाँसी देना उसका राजनीतिक कदम था क्योंकि वे उसके राजनीतिक प्रतिद्वंदी खुसरो से सहायता कर रहे थे। जहाँगीर मुगलकालीन ऐसा सुल्तान था जो हिन्दुओं के त्यौहार में शामिल होता था तथा उसके काल में मुगल-राजपूत सम्बन्ध भी पहले की तरह कायम रहे।

इसी तरह उसने विभिन्न मंदिरों के निर्माण को दान दिया तथा अंग्रेज ईसाईयों को बस्ती बनाने की अनुमति भी प्रदान की।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अकबरकालीन धार्मिक नीति से विचलन का आरोप जहाँगीर पर लगाना पूर्णतया सही नहीं है। वस्तुतः यह उसके राजनीतिक कदम थे जो उसने साम्राज्य की मजबूती के लिए उठाये थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिख आंदोलन एक सामाजिक प्रतिरोध आंदोलन था। टीका कीजिये।

The Sikh movement was a social resistance movement led by Banda Bahadur. Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के पश्चात सिखों के राजनैतिक तथा सामाजिक प्रतिरोध ~~की~~ का नेतृत्व बंदा बहादुर ने किया। जिसका मुख्य उद्देश्य मुगल साम्राज्य का विनाश था।

वस्तुतः मुगलों द्वारा सिखों को गुरु गोविन्द सिंह के नेतृत्व में ही अपनी तरफ मिला लिया था और गोविन्द सिंह मुगलों की तरफ से युद्ध में हिस्सा भी लिये थे। किन्तु परवर्ती मुगल बादशाह यह नीति कायम नहीं रख सके और इनका सिखों के नेता बंदा बहादुर से युद्ध प्रारम्भ हो गया।

इसके सन्दर्भ प्रारम्भ में बंदा बहादुर का धर्म परिवर्तन करने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की कोशिश की गयी और इसके कारण यह आन्दोलन सामाजिक के साथ-साथ राजनीतिक व धार्मिक प्रतिरोध से भी युक्त हो गया। जिसमें मुगलों से संघर्ष के पश्चात एक सिख राज्य की स्थापना करना भी शामिल था।

इस प्रकार विभिन्न कृषक विद्रोहों तथा अन्य सामाजिक विद्रोहों की तरह इसकी शुरुआत तो एक सामाजिक आन्दोलन की तरह ही हुयी थी। किन्तु, आगे घटित होने वाली घटनाओं तथा परिस्थितियों के चलते इसका स्वरूप बदल गया और यह धार्मिक आन्दोलन में परिणत हो गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद कृषि संबंधों की प्रकृति में आए बदलावों की चर्चा कीजिये। 15

Discuss the changes in the nature of agricultural relations after the establishment of the Delhi Sultanate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दिल्ली सल्तनत की स्थापना मुहम्मद गोरी द्वारा पृथ्वीराज चौहान को तराइन के युद्ध (1192) में पराजित करके की गयी। जिसमें इल्तुतमिश द्वारा सुदृढ़ता प्रदान की गयी।

सल्तनत काल के दौरान भी आय का प्रमुख स्रोत भू-राजस्व था। जिस कारण विभिन्न सुल्तानों द्वारा इसको बढ़ाने हेतु कई नीतियाँ लागू की गयी। इसी सन्दर्भ में कृषि क्षेत्र में आये परिवर्तनों को निम्न तरीके से समझा जा सकता है:-

i) समस्त भू० क्षेत्र पर राज्य का नियंत्रण स्थापित किया गया तथा इक्ता व्यवस्था के माध्यम से

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रशासनिक अनुदान दिये गये जिनका उद्देश्य भू-राजस्व वसूलना भी था।

ii) कृषि व्यवस्था में भू राजस्व की मात्रा उच्चतम (लगभग 40-50%) तक रखी गयी।

iii) जमीन की माप (अलाउद्दीन खिलजी) करवायी गयी तथा उसके आधार पर भू-राजस्व का निर्धारण किया गया।

iv) मुहम्मद तुगलक द्वारा फसल-चक्र प्रणाली को लागू किया गया तथा तकावी ऋण भी वितरित किया।

v) तुगलक ने सोंधार ऋण वितरित किया जिसका प्रमुख उद्देश्य बेजर भूमि को उपजाऊ बनाना था।

vi) फिरोज व गयासुद्दीन तुगलक द्वारा सिंचाई प्रणाली में सुधार के लिए विभिन्न नहरों का निर्माण किया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गया।

vii) मुहम्मद तुगलक ने कृषि के विकास हेतु दीवान-ए-कोही विभाग की स्थापना की।

viii) रहट प्रणाली के विकास द्वारा जमीन की सिंचाई में सुगमता आयी।

ix) बाजार नियंत्रण व्यवस्था के चलते एक निश्चित समय तक कृषि उत्पादों की कीमतें भी स्थिर रहीं।

x) फिरोज द्वारा सिंचाई कर तो अलाउद्दीन द्वारा घरी कर तथा चरागाह कर लगाया गया।

xi) खालसा भूमि की संकल्पना आयी, जिस पर इक्तादारों का नहीं, प्रत्यक्ष सुल्तान का शासन था तथा इसकी आय सीधे केन्द्रीय खजाने में जाती थी।

xii) कृषि व्यवस्था में सुधार हेतु मध्यस्थों का अन्त, सिंचाई में सुधार जैसे प्रयास भी किए गए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) 15वीं सदी में उत्तर भारत में उदित एकेश्वरवादी आंदोलनों में विद्यमान आधारभूत साम्यता पर प्रकाश डालिये। 15

Throw light on the basic equity existing in the monotheistic movements that emerged in North India in the 15th century. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भक्ति आन्दोलन का उदय दक्षिण भारत में हुआ। किन्तु रामानन्द ने इसका प्रसार 14वीं-15वीं सदी में उत्तर भारत में भी किया। जिसके चलते उत्तर भारत में धर्म सुधार की प्रक्रिया आरम्भ हुयी तो सूफी आन्दोलन भी एकेश्वरवादी दर्शन पर आधारित था।

वस्तुतः उत्तर भारत में तत्कालीन परिस्थितियाँ ही ऐसी थी जिनके चलते वहाँ एकेश्वरवादी आन्दोलनों का उदय होना आवश्यक हो गया था। ~~वस्तुतः~~ राजनीतिक व्यवस्था के क्रम में शासक प्रजा का शोषण कर रहा था जिससे परेशान जनता शोषण से मुक्ति हेतु उपाय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूर रही थी। जो कि उसे शक्ति में मिला।

इसी प्रकार शासक द्वारा विशेष धर्म को प्रोत्साहन दिये जाने से अन्य लोगों में भी एकता तथा सुधार की भावना जागृत हुयी। जिसके चलते एकेश्वरवाद को बल मिला।

इसी क्रम में सूफी आन्दोलन द्वारा भी एकेश्वरवाद पर बल दिया जा रहा था तथा इसकी लौकिकता के चलते विभिन्न धर्म सुधारकों ने भी एकेश्वरवाद पर ही बल दिया।

वहीं एकेश्वरवाद के कारण जनता में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एकता का प्रसार होता था। इसलिए विभिन्न समाज सुधारकों द्वारा अपने प्रभावों की प्रभावनीयता बढ़ाने हेतु एकेश्वरवाद के महत्व को बताया गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तत्कालीन समाज में विभिन्न प्रकार के कर्मकाण्ड, मूर्ति पूजा, भेदभाव आदि के चलते लोगों द्वारा मुस्लिम धर्म अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ी। जिससे प्रभावित होकर हिन्दु धर्म में भी सुधारों की शुरुआत हुयी तथा सामाजिक स्तर पर बराबरी, भेदभाव में कमी जैसे प्रयासों से समाज में सुधार का प्रयास किया गया। भक्ति धार्मिक सांप्रदायिकता तथा कर्मकाण्ड की समाप्ति के क्रम में एकेश्वरवाद तथा भक्ति पर बल दिया गया।

इस प्रकार भक्ति आन्दोलन के दौरान उत्पन्न सामाजिक-धार्मिक चेतना ने समाज में सुधार के प्रयास किये। जिसकी अन्तिम परिणति 19वीं सदी में हुए सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन में देखी जा सकती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) सल्तनतकालीन विकसित हिंदू-इस्लामी वास्तुकला के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालिये तथा इनके प्रमुख लक्षणों को भी दर्शाइये। 20

Throw light on the gradual development of the developed Hindu-Islamic architecture of the Sultanate period and highlight its main features. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सल्तनतकाल में विकसित हिंदू-इस्लामी वास्तुकला में हिन्दुस्तानी बल्ली-शहतीर शैली तथा इस्लामी अरकुएट व अरबस्क पद्धति का मिश्रण शामिल था।

सल्तनत काल में सर्वप्रथम निर्मित अढाई दिन का झोपड़ा, कुतुबमीनार आदि में इंडो-इस्लामिक शैली का प्रभाव देखा जा सकता है इसी क्रम में खिलजी काल में बनी अलाई दरवाजा इमारत जिसमें गुम्बदों का प्रयोग तथा कमल की झालर व घोड़े की नाल की आकृति का प्रयोग प्रमुख है।

इसी विकास क्रम में तुगलक स्थापत्य में सलामी का प्रयोग किया जाने लगा था। जिसमें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तिरछी दीवारों का प्रयोग प्रमुख था जैसे कि तुगलकाबाद का किला। जिसे देखकर इब्नेबतूता ने कहा था कि यह सूर्योदय के समय इतना तेज चमकता है कि इस पर किसी की आँखे नहीं टिक सकती।

इसी क्रम में सैयद काल को मकबरों का काल कहा जाता है। जहाँ खाने जहाँ तेलंगानी का अष्टकोणीय मकबरा प्रमुख है।

लोदी काल में भवनों व इमारतों का निर्माण बाग के बीच में किया जाने लगा। जिसने कि मुगल चारबाग शैली के लिए आधार का कार्य किया।

हिंदू-इस्लामी वास्तुकला के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं:-

i) भवनों की स्थायित्व व स्थिरता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देने के लिए गुम्बदों का प्रयोग किया जाता था।

ii) सजावट के लिए कुरान की पंक्तियों का प्रयोग किया जाता है। जिसे मरबत्क पद्धति कहते हैं। साथ ही कमल, फूल, पत्ती पेंटे आदि का प्रयोग किया जाता है या। जैसे - कुतुबमीनार

iii) भवन निर्माण में मुख्यतया। बलुआ पत्थर का प्रयोग किया जाता था किन्तु कुछ मात्रा में संगमरमर का प्रयोग भी किया जाता था जैसे - कुतुबमीनार अलाई दरवाजा।

iv) इस्लाम में सजीव चित्रण की मनाही थी। जिस कारण किसी इंसान, जीव आदि का चित्रण नहीं किया जाता था।

v) ~~इस्लाम~~ निर्माण की प्रकृति मुख्यतया धार्मिक थी। जिसका उद्देश्य अपनी प्रजा का समर्थन हासिल करना था। किन्तु कुछ निर्माण धर्मनिरपेक्ष भी थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) सल्तनत काल में विभिन्न शासकों द्वारा मंगोल समस्या के समाधान के लिये अपनाई गई नीतियों की समीक्षा कीजिये। 20

Review the policies adopted by the various rulers during the Sultanate period to solve the Mongol problem. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सल्तनत काल (12वीं सदी - 14वीं सदी) में आन्तरिक खतरों के साथ-साथ सबसे ~~महत्वपूर्ण~~ महत्वपूर्ण खतरा मंगोल आक्रमण का था। जिससे निपटने के लिए विभिन्न शासकों द्वारा विभिन्न नीतियाँ अपनायी गयी तथा उनका सफलतापूर्वक प्रतिरोध भी किया गया।

इल्तुतमिश के शासन काल में जब पहली बार मंगोल आक्रमण का खतरा उपस्थित हुआ तो इल्तुतमिश ने कूटनीतिक क्षमता का परिचय देते हुए ख्वारिज्म के राजकुमार को शरण देने से मना कर दिया। फलतः सल्तनत को मंगोल आक्रमण से बचा लिया।

बलबन के काल में मंगोल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

खतरों से निपटने हेतु सीमावर्ती इलाकों में विभिन्न किलों का निर्माण तथा पुराने किलों की मरम्मत की गयी तथा वहाँ पर योग्य सेनापतियों को नियुक्त किया गया। मंगोल आक्रमण के भय के चलते ही बलबन ने प्रसारकारी नीति न अपनाकर सुदृढ़कारी नीति अपनायी और सल्तनत को मंगोलों से सुरक्षित रखने में सफल रहा।

इसी क्रम में अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोलों को युद्ध में कई बार पराजित भी किया। वस्तुतः उसने एक सुदृढ़ सेना का निर्माण किया था तथा उसे जफर खाँ, उलूग खाँ जैसे सेनापतियों का साथ भी प्राप्त था। जिसके चलते अलाउद्दीन सल्तनत को मंगोलों से सुरक्षित रख पाया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुहम्मद तुगलक के शासन काल में मंगोलो के आक्रमण कम हो गये जिसके चलते तुगलक ने साम्राज्यवादी प्रसार तथा प्रत्यक्ष नियंत्रण पर बल दिया।

उपर्युक्त विभिन्न शासकों द्वारा मंगोल आक्रमण के संदर्भ में परिस्थितियों के अनुसार नीति-निर्माण किया गया और सफलतापूर्वक सल्तनत की सुरक्षा की गयी।

इल्तुतमिश, बलबन, अलाउद्दीन खिलजी द्वारा मंगोल आक्रमण को विफल कर भारतीय सल्तनत को असुरक्षा व स्थायी खतरे के चलते ही इनकी मंगोल संबंधी नीति को एक हद तक सफल माना जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) शाहजहाँ के शासनकाल में उज़बेक-मुगल संबंधों में आए बदलाव के कारणों की चर्चा करते हुए उसके द्वारा अपनाए गए सामरिक एवं कूटनीतिक प्रयासों को स्पष्ट कीजिये। 15

Explain the strategic and diplomatic efforts adopted by Shah Jahan while referring to the reasons for the coming changes in Uzbek-Mughal relations. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मुगल काल की स्थापना के साथ ही विभिन्न मुगल बादशाहों की यह ख्वाहिश थी कि एक बार अपने पैतृक राज्य (फरगाना) को भी अपने शासन में शामिल किया जाये। जिसके चलते मुगलों द्वारा कई बार उजबेकों से संपर्क के प्रयास किये गये।

किन्तु कभी इनको मूर्तरूप में नहीं बदला जा सका। क्योंकि बाबर व हुमायु के समय मुगल साम्राज्य इतना शक्तिशाली नहीं था तो अकबर दक्षिण भारत में प्रचार में उलझा रहा। इसी प्रकार जहाँगीर भी दक्षिण भारतीय समस्या में व्यस्त रहा।

किन्तु जब शाहजहाँ ने 1636

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में बीजापुर, गोलकुण्डा से सन्धि कर दक्षिण के सन्दर्भ में अपनी स्थिति मजबूत की तो इसके द्वारा सब उजबेकों पर हमले की योजना बनायी गयी। ~~[illegible]~~ इसके लिए उसने मुराद के नेतृत्व में उजबेक साम्राज्य पर हमला किया और वहाँ नियंत्रण कायम किया।

किन्तु वहाँ की सख्त जलवायु, घर से अत्यधिक दूरी के चलते वहाँ मुगल सैनिकों का मन नहीं लगा और वे वहाँ से छोड़कर चले आये। इस कारण राजकोष पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। जिसकी भरपाई आवश्यक थी तो इसलिए शाहजहाँ ने 1656 में बीजापुर व गोलकुण्डा से की गयी सन्धि तोड़ दी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिसके परिणामस्वरूप दक्षिण भारतीय राज्यों में मुगलों के खिलाफ अविश्वास को बढ़ावा मिला तथा औरंगजेब के शासन काल में दक्षिण भारतीय राज्यों का मुगलों से संघर्ष रहा और अन्ततः औरंगजेब व मुगल साम्राज्य के पतन का कारण यह संघर्ष बना।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उजबेकों से संबंधित शाहजहाँ द्वारा अपनायी गयी नीति सफल नहीं रही और इसकी असफलता ने अन्य नकारात्मक प्रक्रियाओं को जन्म दिया जिसने मुगल साम्राज्य को अस्थिर किया।

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation